

## खेती में अब तकनीक का दौर, कृषि शिक्षा से खुल रहे रोजगार के नए रास्ते

जागरण संवाददाता, कानपुर : इंटरमीडिएट के परीक्षा परिणाम आने के बाद करियर को लेकर असमंजस में फंसे अभिभावक सबसे पहले बच्चों की रुचि जानें, इसके बाद ही आगे का निर्णय लें। यह बच्चों के करियर के लिए सबसे बेहतर होगा। चन्द्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) में पारंपरिक कोर्स के साथ ही आज की जरूरतों को ध्यान में रखकर नए पाठ्यक्रम भी तैयार किए गए हैं, जो विद्यार्थियों को रोजगारपरक साबित हो रहे हैं। यह बातें सीएसए के कुलपति **डा. संजीव गुप्ता** ने दैनिक जागरण के प्रश्न पत्र में पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देते हुए कहीं। प्रस्तुत है बातचीत के प्रमुख अंश :



**प्रश्न पत्र**

● कृषि क्षेत्र में आने वाले युवाओं के लिए यह फील्ड कैरी है, क्या संदेश देगे? अभिव्यक्त, नौबस्ता

—कृषि भविष्य का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र बनने जा रहा है। युवा नवाचार, रिसर्च और आधुनिक तकनीक के साथ इस क्षेत्र में आगे बढ़ें। यही आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव बनेगा।

● इंटर करने के बाद सीएसए में किन स्नातक विषयों में प्रवेश लेना ठीक रहेगा, करियर की संभावनाएं किन्ती हैं? अमन पांडेय, चौबेपुर

—बीएससी आनर्स में कृषि, हार्टिकल्चर (बागवानी) और फारस्ट्री (वानिकी) प्रवेश उत्तर प्रदेश कंबाईंड एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी एंटरप्राइज के माध्यम से होता है। इसकी प्रवेश

परीक्षा 16 व 17 जून को आयोजित होगी है। कृषि क्षेत्र तेजी से बदल रहा है, आधुनिक तकनीक, ड्रोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और जैविक खेती के कारण कृषि में रोजगार के नए अवसर पैदा हुए हैं। छात्र सरकारी सेवाओं, शोध संस्थानों, एग्री कंपनियों और उद्यमिता के क्षेत्र में बेहतर करियर बना सकते हैं।

पहले बच्चे को पसंद को जानें, उसके बाद आगे करियर चुनने में उसकी मदद करें। अधिक जानकारी के लिए विश्वविद्यालय के कुलसचिव कार्यालय में काउंसिलिंग के संपर्क कर सकते हैं।

● सीएसए में प्रवेश कैसे होता और कृषि पढ़ने वाले छात्रों को प्लेसमेंट के क्या अवसर मिलते हैं? हिमांशु द्विवेदी, शारदा नगर

—प्रदेश के पंचों कृषि विश्वविद्यालयों में उत्तर प्रदेश कंबाईंड एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी एंटरप्राइज के माध्यम से स्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश होता है। वहीं, बोटिक पाठ्यक्रमों में एकेटीयू को काउंसिलिंग से प्रवेश होता है। कृषि विषय पढ़ने वाले छात्रों को निजी एग्री कंपनियों, बीज उद्योग, खाद कंपनियों, बैंकिंग, एग्री स्टार्टअप और सरकारी विभागों में घबर्नात हो रहे हैं। कई छात्र स्वयं का उद्यम भी कर रहे हैं।

«दैनिक जागरण के प्रश्न पत्र में पाठकों के सवाल का जवाब देते सीएसए के कुलपति डा. संजीव गुप्ता» जगद्वज

● मेरे बेटे ने साइंस स्ट्रीम बायो से इंटरमीडिएट की पढ़ाई की है, उसके लिए सीएसए में आगे की पढ़ाई के लिए क्या विकल्प है? श्रीकृष्ण शुक्ला, गांधीग्राम

—कृषि क्षेत्र अब पारंपरिक खेती तक सीमित नहीं रह गया है। आधुनिक तकनीक, एग्री स्टार्टअप, ड्रोन तकनीक और फूड प्रोसेसिंग जैसे क्षेत्रों ने युवाओं के लिए नए अवसर

तैयार किए हैं। सीएसए में बीएससी स्नातक और बोटिक जैसे विषयों को पढ़ाई होती है। इनमें प्रवेश लेकर छात्र रिसर्च, एग्री बिजनेस, फूड प्रोसेसिंग, जैव प्रौद्योगिकी और एग्री स्टार्टअप जैसे क्षेत्रों में आगे करियर बना सकते हैं।

● मैंने इंटरमीडिएट साइंस साइड से किया है, जिसमें गणित मेरा मुख्य विषय था। सीएसए में

बोटिक पाठ्यक्रमों में कैसे प्रवेश मिलेगा? अभिनव शुक्ला, विजयनगर

—आज विश्वविद्यालय में बीएससी आनर्स में संचालित कृषि, हार्टिकल्चर (बागवानी) और फारस्ट्री (वानिकी) में तो प्रवेश ले ही सकते हैं। साथ ही डा एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय की ओर से

आयोजित काउंसिलिंग में शामिल होकर हमारे यहां संचालित बोटिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश ले सकते हैं।

● सीएसए में 12वीं के बाद छात्रों के लिए कौन-कौन से पाठ्यक्रम हैं, उसमें प्रवेश कैसे होते हैं? जयप्रकाश तिवारी, बर्रा एक

—सीएसए में स्नातक स्तर पर बीएससी में तीन पाठ्यक्रम संचालित हैं, वहीं इंजीनियरिंग के

चार पाठ्यक्रम पढ़ाए जाते हैं। इन दोनों में प्रवेश की प्रक्रिया अलग-अलग है। स्नातक स्तर में उत्तर प्रदेश कंबाईंड एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी एंटरप्राइज के माध्यम से होता है, इस साल आवेदन समाप्त हो चुका है। बोटिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश एकेटीयू के माध्यम से हो रहे हैं।

● वेटा सीवीएसई से 12वीं कर

रहा है, करियर के लिए कौन-कौन से विषय बेहतर होगा? सुभाष चंद्र झा, कल्याणपुर

—सीएसए में बीएससी आनर्स में एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर और फारस्ट्री विषय में प्रवेश ले सकता है। इसके अलावा बोटिक एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग, कंप्यूटर साइंस साहित कई और बोटिक के कोर्स हैं जिनमें प्रवेश ले सकता है।

दैनिक आज 21/05/2026

## संतुलित उर्वरीकरण सतत कृषि की कुंजी

कानपुर, 20 मई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर एवं भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में विकासखंड चौबेपुर के गांव रौतापुर कला में संतुलित उर्वरक प्रबंधन विषय पर जागरूकता अभियान चलाया गया। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कहा कि संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन पोषक तत्वों के अधिकतम अवशोषण और हानियों को न्यूनतम करके उर्वरक उपयोग दक्षता को बढ़ाता है। साथ ही पोषक तत्वों के बीच सहक्रियात्मक अंतःक्रियाओं को प्रोत्साहित करता है, जो पौधों की बेहतर वृद्धि, फसल प्रदर्शन और उत्पादकता को सहारा देती हैं। यह दीर्घकाल में मृदा उर्वरता-जिसमें मृदा कार्बनिक पदार्थ और जैविक स्वास्थ्य शामिल हैं-को बनाए रखता है, पर्याप्त पोषण के माध्यम से संभावित और वास्तविक फसल उपज के बीच के अंतर को कम करने में सहायक होता है, तथा असंतुलित उर्वरक उपयोग से उत्पन्न पोषक तत्व अपवाह, रिसाव और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन जैसे पर्यावरणीय प्रभावों को घटाता है।

भोपाल

गुरुवार

21 मई 2026

वर्ष: 12, अंक: 383

कुल पृष्ठ: 8

मूल्य : 2.00

दैनिक  
**समर्थ**  
सच को सच कहने का अदम्य साहस

samarthsaharabhopal@gmail.com

**सहारा**

# संतुलित उर्वरक प्रबंधन विषय पर चलाया जागरूकता अभियान

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर एवं भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान कानपुर के संयुक्त तत्वाधान में विकासखंड चौबेपुर के गांव रौतापुर कला में संतुलित उर्वरक प्रबंधन विषय पर जागरूकता अभियान चलाया गया। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कृषकों को बताया कि संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन पोषक तत्वों के अधिकतम अवशोषण और हानियों को न्यूनतम करके उर्वरक उपयोग दक्षता को बढ़ाता है, साथ ही पोषक तत्वों के बीच सहक्रियात्मक अंतःक्रियाओं को प्रोत्साहित करता है, जो पौधों की बेहतर वृद्धि, फसल प्रदर्शन और उत्पादकता को सहारा देती हैं। यह दीर्घकाल में मृदा उर्वरता—जिसमें मृदा कार्बनिक पदार्थ और जैविक स्वास्थ्य शामिल हैं—को बनाए रखता

है, पर्याप्त पोषण के माध्यम से संभावित और वास्तविक फसल उपज के बीच के अंतर को कम करने में सहायक होता है, तथा असंतुलित उर्वरक उपयोग से उत्पन्न पोषक तत्व अपवाह, रिसाव और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन जैसे पर्यावरणीय प्रभावों को घटाता है। डॉ खान ने बताया कि

संतुलित उर्वरीकरण का वैज्ञानिक आधार जस्टस वॉन लीबिग के न्यूनतम का नियम (Law of the Minimum) से जुड़ा है, जिसके अनुसार फसल की वृद्धि उस पोषक तत्व द्वारा सीमित होती है जिसकी उपलब्धता सबसे कम होती है, भले ही अन्य पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हों। यह सिद्धांत इस बात को रेखांकित करता है कि किसी एक पोषक तत्व का अत्यधिक प्रयोग निरर्थक है, जब

अन्य आवश्यक पोषक तत्वों की कमी बनी रहती है। अतः संतुलित उर्वरीकरण का तात्पर्य सभी आवश्यक पादप पोषक तत्वों—मुख्य पोषक तत्वों तथा सूक्ष्म पोषक तत्वों—का फसल की आवश्यकता, मृदा की उर्वरता स्थिति और प्रचलित जलवायु परिस्थितियों के आधार पर उचित अनुपात, मात्रा, समय और विधि से प्रयोग करना है। यह केवल नाइट्रोजन (N), फॉस्फोरस (P) और पोटैश (K) के उपयोग की पारंपरिक पद्धति से आगे बढ़कर एक समग्र पोषक तत्व प्रबंधन दृष्टिकोण को अपनाता है। डॉ अभिषेक बोहरा ने भी किसानों को जानकारी दी। डॉ रिवैन सिद्धा ने किसानों को फसल सुरक्षा से संबंधित विस्तार से जानकारी दी इस अवसर पर 35 से अधिक किसान उपस्थित हुए।



# राष्ट्रीय स्वरूप

## संतुलित उर्वरक प्रबंधन विषय पर चलाया जागरूकता अभियान

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर एवं भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान कानपुर के संयुक्त तत्वाधान में विकासखंड



चौबेपुर के गांव रौतापुर कला में संतुलित उर्वरक प्रबंधन विषय पर जागरूकता अभियान चलाया गया। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कृषकों को बताया कि संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन पोषक तत्वों के

अधिकतम अवशोषण और हानियों को न्यूनतम करके उर्वरक उपयोग दक्षता को बढ़ाता है, साथ ही पोषक तत्वों के बीच सहक्रियात्मक अंतःक्रियाओं को प्रोत्साहित करता है, जो पौधों की बेहतर वृद्धि, फसल प्रदर्शन और उत्पादकता को सहारा देती हैं। यह दीर्घकाल में मृदा उर्वरता—जिसमें मृदा कार्बनिक पदार्थ और जैविक स्वास्थ्य शामिल हैं—को बनाए रखता है, पर्याप्त पोषण के माध्यम से संभावित और वास्तविक फसल उपज के बीच के अंतर को कम करने में सहायक होता है, तथा असंतुलित उर्वरक उपयोग से उत्पन्न पोषक तत्व अपवाह, रिसाव और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन जैसे पर्यावरणीय प्रभावों को घटाता है। डॉ खान ने बताया कि

संतुलित उर्वरीकरण का वैज्ञानिक आधार जस्टस वॉन लीबिग के न्यूनतम का नियम (Law of the Minimum) से जुड़ा है, जिसके अनुसार फसल की वृद्धि उस पोषक तत्व द्वारा सीमित होती है जिसकी उपलब्धता सबसे कम होती है, भले ही अन्य पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हों। यह सिद्धांत इस बात को रेखांकित करता है कि किसी एक पोषक तत्व का अत्यधिक प्रयोग निरर्थक है, जब अन्य आवश्यक पोषक तत्वों की कमी बनी रहती है। अतः संतुलित उर्वरीकरण का तात्पर्य सभी आवश्यक पादप पोषक तत्वों—मुख्य पोषक तत्वों तथा सूक्ष्म पोषक तत्वों—का फसल की आवश्यकता, मृदा की उर्वरता स्थिति और प्रचलित जलवायु परिस्थितियों के आधार पर उचित अनुपात, मात्रा, समय और विधि से प्रयोग करना है। यह केवल नाइट्रोजन (ह), फॉस्फोरस (क) और पोटैश (च) के उपयोग की पारंपरिक पद्धति से आगे बढ़कर एक समग्र पोषक तत्व प्रबंधन दृष्टिकोण को अपनाता है। डॉ अभिषेक बोहरा ने भी किसानों को जानकारी दी। डॉ रिवैन सिद्धा ने किसानों को फसल सुरक्षा से संबंधित विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर 35 से अधिक किसान उपस्थित हुए।